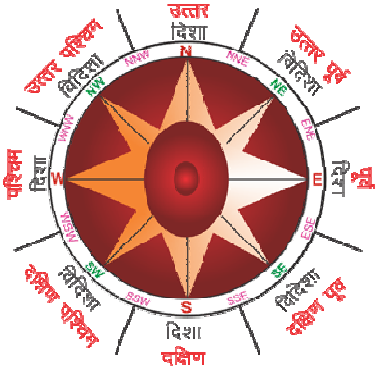

'वास्तु'

जैसे ही हम अपने घर में प्रवेश करें और देखें कि बिस्तर (Bed) के ऊपर किताबें फैली हुई हैं और कमरे में बाकी सामान भी इसी प्रकार से इधर–उधर फैला हुआ है, तभी हमारे मस्तिष्क (Mind) में विचार आता है कि ये सभी प्रकार के सामान अपने–अपने निर्धारित स्थान (Fixed Place) पर होने चाहिए, वे स्थान जो हमने स्वयं निश्चित किए हुए हैं। यदि घर की सभी वस्तुएं अपने–अपने निर्धारित स्थान पर रहें, तो जीवन में सुख को बढ़ाती हैं और उन्हें खोजना (Search) भी नही पड़ता, जैसे किताबें, कॉपियां पलंग पर न होकर अपने स्थान पर होती तो थका हुआ व्यक्ति सीधा जाकर पलंग पर लेट कर आराम कर सकता है या सो सकता है। ठीक इसी प्रकार से वास्तु शास्त्र भी हमें एक विशेष वस्तु को एक विशेष स्थान पर रखने के लिए बताता है ताकि उनकी सकारात्मक ऊर्जा (Positive Energy) को बढ़ाया जा सके और नकारात्मक ऊर्जा (Negative Energy) को कम किया जा सके। जिससे हम जीवन में प्रसन्नता, खुशहाली, आनन्द आदि को बढ़ा सकें।

वास्तु शास्त्र की आधारशिला रखने वाली दिशाएं (Directions) और उनके तत्व (Element), निम्न चित्र मे दर्शाए गए हैं।

यदि अग्नि तत्व (Fiery Sign) से संबंधित वस्तुएं अग्नि स्थान (Location for Fire) पर ही हों तो सकारात्मक ऊर्जा (Positive

Energy) को बढ़ाती हैं और यदि अग्नि तत्व (Fiery Signs) के स्थान पर जल तत्व (Watery Signs) की वस्तुएं हों तो नकारात्मक ऊर्जा (Negative Energy) को बढ़ाती हैं। क्योंकि ये एक दूसरे के विपरीत हैं।

वास्तु का अर्थ है, वास करने योग्य स्थान या बसने योग्य स्थान। अर्थात् वह स्थान जहां पर पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु एक स्थान पर आकर मिलते हैं।

64 (चौंसठ) कलाओं में वास्तु शास्त्र को भी एक कला के रूप में लिया गया है। वास्तु कई प्रकार से लगाया जा सकता है या इसकी गणना की जा सकती है। जैसे नगर वास्तु, गृह वास्तु, प्रसाद वास्तु, दुर्ग वास्तु, पुर वास्तु आदि। यह सारा वर्णन ऋग्वेद में है। वास्तु शास्त्र केवल भारत में ही नही पूरे विश्व में अपनी सत्यता के कारण तेजी से प्रसिद्ध हो गया है। वास्तु शास्त्र एक प्राचीन वैज्ञानिक सिद्धांत (Ancient Scientific Principle) है। इन सिद्धांतों (Principles) को अपनाकर हम अपने जीवन को खुशियों से भर सकते हैं और मन को प्रसन्न रख सकते हैं। यदि अज्ञानता के कारण कुछ तत्व अपने नियमित स्थान पर नही हैं जैसे रसोई घर के स्थान पर बच्चों के पढ़ने का कमरा होना। जिसके कारण बच्चों का ध्यान पढ़ते वक्त भी खाने–पीने की तरफ रहता है और बच्चे ठीक से नही पढ़ पाते। ऐसा नही है कि इस दोष को दूर नही किया जा सकता।

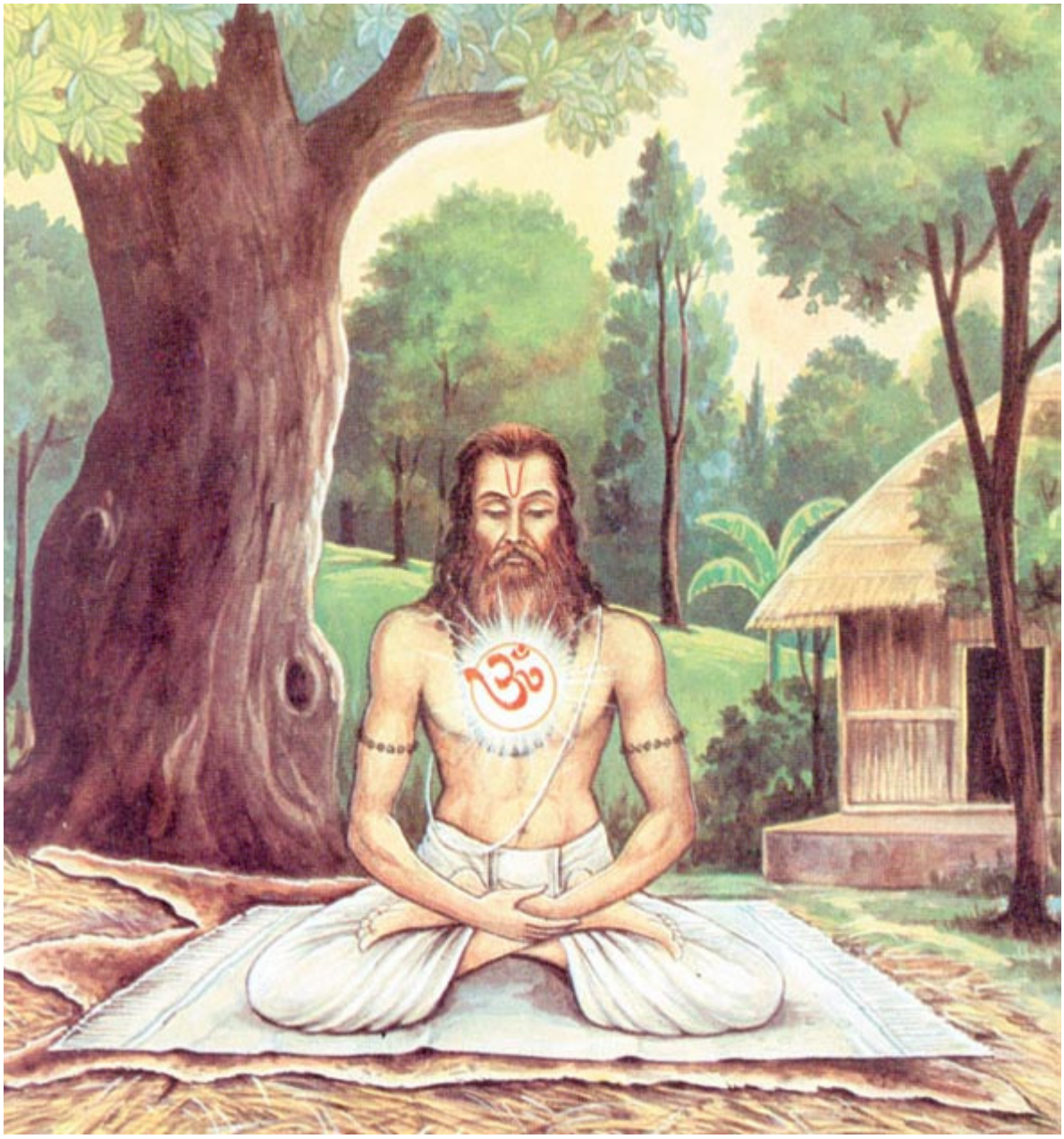

प्राचीन ऋषियों (Ancient Sages) ने इस प्रकार के दोषों को भी दूर करने का पूरा प्रयास किया है। ठीक जगह पर वस्तुओं के होने से जीवन में संतुलन बना रहता है और सुख की प्राप्ति होती है। वास्तु दोष छोटे–मोटे बदलाव लाकर पूरी तरह से दूर किए जा सकते हैं जैसेः– स्थान परिवर्तन करके, घंटियां लगाकर, हल्की या तेज रोशनी करके, बांस या बांस से बनी वस्तुएं (चिक) आदि लगाकर या हटाकर, कुछ विशेष प्रकार के पेड़–पौधे लगाकर, क्रिस्टल बॉल, दर्पण, फव्वारे, भारी

पत्थर की मूर्तियों को लगाना या हटाना, पवन–चक्की से, बिजली के यंत्रों से, मछली घर (aquarium) आदि उपायों से वास्तु दोषों को पूरी तरह से समाप्त किया जा सकता है या उनके नकारात्मक (Negative) असर को कम किया जा सकता है।

वास्तु शास्त्र के ज्ञान से हम ब्रह्माण्ड़ की ऊर्जा (Universal Power) को अपने जीवन के साथ जोड़ सकते हैं और अपनी सकारात्मक ऊर्जा को कई गुणा बढ़ा सकते हैं।

अथर्ववेद में मंत्र मिलता है। **अन्तरा द्यां च पृथिवी च यद् व्यचस्तने शालां प्रतिगृह्णामि त इमाम्। यदन्तरिक्षं रजसो विमानं तत् कृण्वेअहमुदरं शेविधभ्यः। तेन शालां प्रतिगृह्णामि तस्मै।।**

इसका अर्थ हैः–प्रकृति के अनुसार बनाई गई सभी वस्तुएं जैसे भवन, राजमहल, देवालय, बगीचा, किले, जलाशय आदि हमारे मन को अति प्रसन्न करते हैं। इसी रचना को वास्तु शास्त्र कहते हैं।

मत्स्यपुराण के अनुसारः—

भृगुरत्रिर्वसिष्ठच्श्र विश्वकर्मामयस्तथा। नारदो नग्रजिच्चैव विशालाक्षः पुरन्दरः।। ब्रह्मा कुमारो नन्दीशः शौनको गर्ग एव च। वासुदेवोअनिरूद्धच्श्र तथा शुक्र बृहस्पति।। अष्टादशैत विख्याता वास्तु शास्त्रोपदेशकाः।

इसका अर्थ है वास्तु शास्त्र के उपदेष्टा अठ्ारह प्रकार के हैं जो निम्न हैंः— 1.भृगु, 2. अत्रि, 3.वशिष्ठ, 4. विश्वकर्मा, 5. मय, 6. नारद, 7.नग्रजित, 8. भगवान शकंर, 9. इन्द्र, 10. ब्रह्मा, 11. कुमार, 12. नन्दीश्वर, 13

शौनक, 14. गर्ग, 15. भगवान वासुदेव, 16. अनिरूद्ध, 17. शुक्र, 18. बृहस्पति।

वास्तु शास्त्र पूरी तरह से पांच तत्वों (Five Signs) पर आधारित है जो निम्न प्रकार से हैं।

पृथ्वी तत्व (Earthy Signs),

जल तत्व (Watery Signs),

वायु तत्व (Airry Signs),

अग्नि तत्व (Fiery Signs)

और आकाश तत्व (Universe Element),

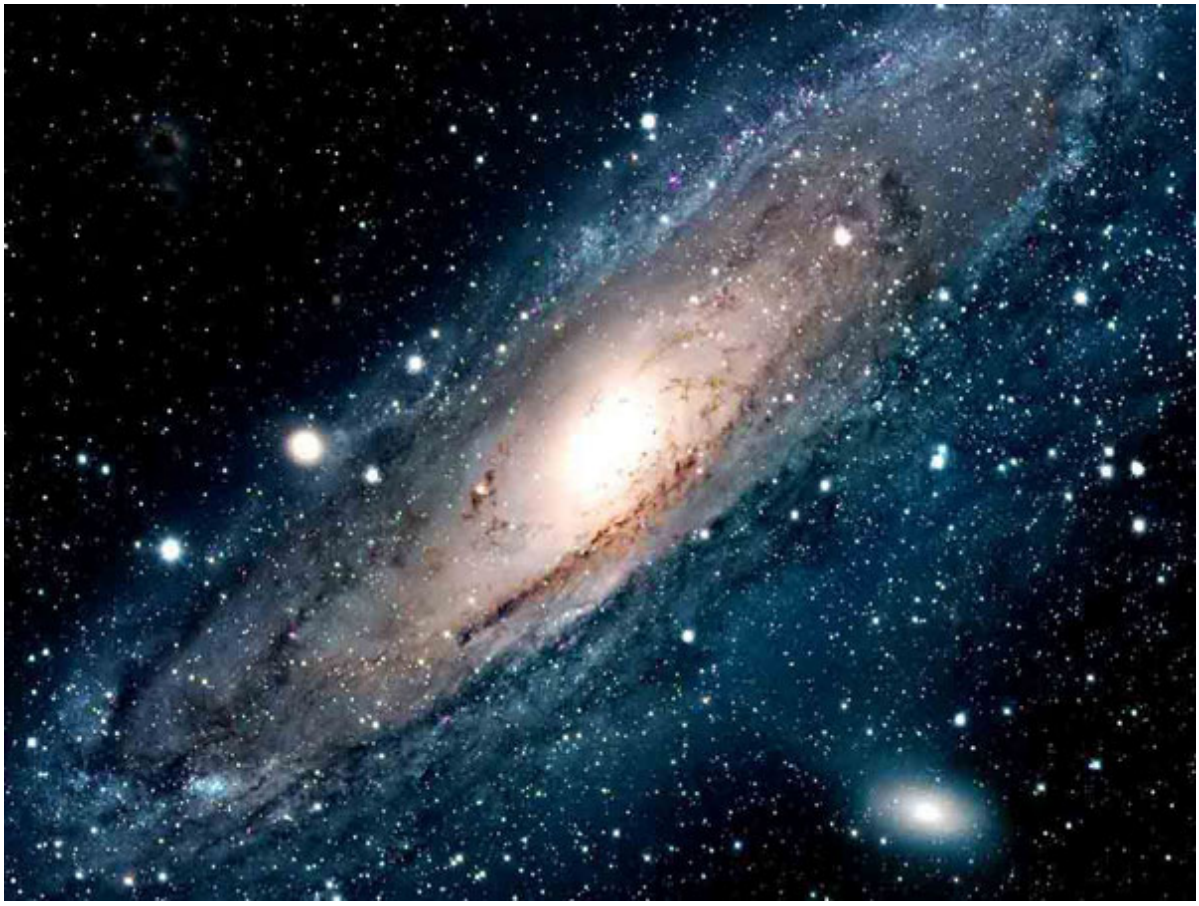

इसीलिए यदि संभव हो सके तो भूमि का चयन भी पांच तत्वों जैसेः— सुगंध, स्पर्श, स्वाद, रंग और आकार पर विचार करके निश्चित करना चाहिए।

भूमि का चयन करने से पहले निम्न बातों का ध्यान रखें। भूखण्ड जीवित होना चाहिए। जीवित का अर्थ है कि उसमें घास आदि उगी हुई हो। दीमक लगी हुई भूमि या उबड़—खाबड़ भूमि या अधिक गड्ढ़ों वाली भूमि शत्रुओं और कष्टों को बढ़ाती है।

कुछ साधारण से प्रयोग भूमि को जांचने के लिए बताए गए हैं जैसेः–

1. भूमि पर यदि एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा, एक हाथ गहरा वर्ग (Cubic) 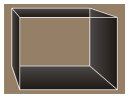 के आकार का गड्ढ़ा खोद कर मिट्टी बाहर निकालकर, फिर उसी मिट्टी को उसी गड्ढ़े में फिर से डाल कर देखें। यदि मिट्टी बचे तो भूखण्ड़ श्रेष्ठ (Best) है। बिलकुल बराबर आए तो मध्यम (Average) और यदि कम पड़ जाए तो अशुभ (Bad) है। ऐसे भूखण्ड़ को कभी भी खरीदना नही चाहिए या रहने के लिए प्रयोग में नही लाना चाहिए।

2. गड्ढ़ा खोदते वक्त कंकड़–पत्थर, शंख, धातु या धातु के सिक्के आदि निकलें तो अच्छी भूमि समझनी चाहिए। यदि हड्डियाँ, टूटे बर्तन, कोयला, जली हुई लकडी, बाल या राख निकले तो अशुभ मानी जाती है।

3. उसी गड्ढ़े में यदि जल भर कर के छोड़ दिया जाए और 24 घण्टे के बाद जल उसमे बचे तो शुभ–भूमि, न बचे तो मध्यम भूमि या फिर गड्ढ़े में दरारें पड़ जाएं तो अशुभ भूमि माननी चाहिए।

4. भूमि पर यदि एक मुट्ठी मूंग, सरसों, तिल, जौ, गेहूं या धनिया आदि बो दें और एक हफ्ते बाद यदि वे अंकुरित हो जाएं, तो भूमि शुभ है।

5. गड्ढ़ा खोदते वक्त यदि मिट्टी अपना रंग बदले तो शुभ–अशुभ के प्रभाव को बढ़ाती या घटाती है।

नोटः– यह प्रयोग कम से कम दो जगह या दो से अधिक जगह पर मिट्टी खोदकर अवश्य करना चाहिए। उपरोक्त पांचों में से कम से कम यदि तीन अंक प्राप्त हों तो मध्यम (Average), चार अंक प्राप्त हों तो उत्तम (Good), पांच में से पांच हों तो श्रेष्ठ (Best) समझना चाहिए।